स्थापना
अधिवेशन 1

यीशु मसीह : सामने और मध्य

यीशु मसीह : सामने और मध्य

पहले अधिवेशन का शीर्षक यीशु मसीह : सामने और मध्य है।

सबसे पहले हम परिभाषा से आरम्भ करेगें... एक विश्वासी कौन है अपनी प्रशिक्षण पुस्तिका मे देखिए वहां पर लिखा है

> ''विश्वासी वह है जिसने अपना जीवन मसीह को समर्पित कर दिया है, जो उससे प्रेम करता, उस पर उद्धारकर्ता के रूप में भरोसा करता और प्रभु की तरह उसका आज्ञाकारी है।''

इसमें कोई संदेह नहीं की, एक विश्वासी या मसीही होने की और भी कई वैध परिभाषाऐं हैं, परन्तु याद करने के लिए यह एक आसान परिभाषा है, और आप ध्यान देगे कि इसके केन्द्र स्वंय यीशु है। बहुत से लोग मसीहत को एक परम्परा के रुप मे देखते हैं। परन्तु यीशु मसीह को व्यक्तिगत रूप से जानना ही मसीहत है।

ध्यान रहे कि यीशु मसीह के साथ सम्बन्ध में तीन भिन्न प्रकार के पहलु हैं । आप ध्यान दोगे कि जिन्होंने व्यक्तिगत रूप से अपना जीवन यीशु को सोंप दिया है :—

- सबसे पहले, वे उसे प्रेम करते हैं।
- दूसरा, वे उस पर अपने उदारकर्ता के रूप में भरोसा करते है
- तीसरा, वे उसे अपना प्रभु मानते हुए उसके प्रति आज्ञाकारी हैं

इसलिए यदि आप इन शब्दों... प्रेम, भरोसा और आज्ञाकारिता को लें और उसे प्रभु यीशु मसीह से संबंधित करे तो आपके पास एक अच्छी परिभाषा प्राप्त हो जाती है जिसे आप याद रख सकते हैं।

इस प्रथम अधिवेशन में हम प्रभु यीशु मसीह से संबंध रखने वाले प्रथम दो पहलुओं को देखने जा रहे हैं

पर यह यीशु है कौन?

- एक एकांकी जीवन

- सी.एस. लूईस द्वारा लिखित ''मसीहत का केस'' पुस्तक

यीशु मसीह सामने और मध्य

विश्वासी कौन है ?

''विश्वासी वह है जिसने अपना जीवन मसीह को समर्पित कर दिया है, जो उससे प्रेम करता उस पर उद्धारकर्ता के रूप में भरोसा करता और प्रभु की तरह उसका आज्ञाकारी है।''
यीशु मसीह नामक व्यक्ति हमारी परिभाषा का केन्द्र है और उसका नहीं

शिक्षांए
आश्चर्यकम
धर्मसिद्धान्त

हमारे व्यक्तिगत समपर्ण के कम से कम तीन आयाम है :

. **यीशु मसीह के लिए व्यक्तिगत प्रेम**

(क) क्योकि वह हमसे प्रेम करता हैः
हम उससे प्रेम करते हैं क्योकि पहले उसने हमसे प्रेम किया — 1यहून्ना 4:19

परन्तु परमेश्वर ने अपना प्रेम इस संसार पर प्रगट किया कि जब हम पापी ही थे तब यीशु हमारे लिए मरा — रोमियों 5:8

(ख) क्योंकि उसने अपने आप को हमारे लिए दे दिया।

(ग) क्योंकि हम उसे जान जाते हैं।

. **उद्धारकर्ता के रूप में उस पर भरोसा**

(क) हमें वह क्यों उद्धारकर्ता के रूप में आवश्यक है ?

1. उत्पति 3 में पा **प** ..... की कहानी
2. पाप क्या है

क. **चूकना**

''क्योंकि जो कोई सारी व्यवस्था का पालन करता है और वह एक ही बात में चूक जाए तो वह दोषी ठहरता है।'' — याकूब 2:10

ख. **निषेद**

''...जो भलाई करना जानता है और नहीं करता वह पाप करता है।'' — याकूब 4:17

ग. अविश्वास : सबसे बड़ा पाप

''जो उस पर विश्वास करता है उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं है, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका है इसलिए कि उसने परमेश्वर के इकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया।'' — यहून्ना 3:18

एक एकांकी जीवन

नासरत के यीशु का जन्म 2010 साल पहले हुआ था। सैंकड़ों साल पहले इस्राएल के महान भविष्यवक्ताओं ने उसके आने के बारे में बताया था। पुराना नियम करीब 1500 साल पहले लिखा गया, जिसमें उसके आने के बारे में 300 संदर्भ दिए गए हैं। उसकी जनता के बीच सेवा केवल 3 साल की थी। उस समय मे उसने मनुष्य को पूर्ण जीवन, बहुतायत का जीवन और आने वाले जीवन के बारे में नुस्खा दिया था।

हमारें दिनों कें मशहुर इतिहासकार आरनोल्ड टोयनबी ने नासरत के यीशु को दूसरे अन्य 6 महान व्यक्तियों जिसमें मुहम्मद, बुद्धा, कैसर और नेपौलियन और जार्ज वाशिंगटन, से उच्च स्थान दिया।

ब्रिटेनिका एनसाईकलापिडिया ने यीशु के लिए 20,000 शब्द दिए। सभी देशों के धर्मों के लोगों को जिन्हें प्रामणो की खोज करने के अवसर प्राप्त हुए, वे सभी इस बात से सहमत हैं, कि यीशु ही सबसे महान व्यक्तित्व इस संसार में हुआ है।

ये जानना दिलचस्प है कि यीशु ही परमेश्वर है। वह नई जीवन की राह का लेखक भी है। यह दिलचस्प है कि, जहां कहीं भी ये संदेश पहुंचा है, वहां नया जीवन, नई आशा, और जीवन का अभिप्राय परिणाम स्वरूप निकला। या तो नासरत का यीशु जैसा उसने दावा किया, वो या तो परमेश्वर का पुत्र और मानव का उद्धारकर्ता है या फिर संसार का सबसे बडा ठग जो अभी तब जाना गया हो।

अक्सर एक बात सुनते हैं कि **यह इतिहास** उसका इतिहास है, एक व्यक्ति की जीवन कहानी, क्योंकि यदि आप इस इतिहास से नासरत के यीशु को हटा दे तो इतिहास बिल्कुल भिन्न हो जाएगा। एक लेखक ने उसके प्रभाव को इस प्रकार से वर्णन किया हैः ''उन्नीस बड़ी शताब्दियां आई और आकर चली गई, वह मानवजाति का केन्द्र है और विकास के भाग का अगुवा है। मैं उस चिन्ह से काफी दूर हूं जब मैं कहता हूं कि समस्त सेनाऐं जो अभी तक आई और जितने भी थल सेनाए बनाई गई और सभी पार्लियामेन्ट जो कभी बनाई गई और सभी राजाओं जिन्होंने राज्य किया, उन्होंने सबने मानव जीवन पर असर नहीं डाला जितना कि एक वयक्ति नासरत के यीशु के एकांकी जीवन से पड़ा।''

अन्जान लेखक

सी. एस लूईस अपने मशहुर वर्णन, ''मसीहत का केस'' में कहते हैंः

''एक व्यक्ति जो केवल मात्र एक मनुष्य था और वे बातें जो यीशु मसीह ने कहीं उनको सुसने से यह नही जान पडता कि वह एक नैतिक शिक्षक है। वह या तो एक पागल व्यक्ति होगा या फिर ऐसा स्तर का व्यक्ति जो ये कहे कि वह अन्डे के भीतर गरम तरल पदार्थ है – या फिर वह नरक का शैतान होगा! आपको अपना चुनाव करना है। या तो वह परमेश्वर का पुत्र है या पागल व्यक्ति है या फिर कुछ बुरा। आप उसे दुष्ट आत्मा की तरह रोक सकते हैं या फिर उसके कदमों मे गिर सकते हैं और उसे प्रभु और परमेश्वर कह सकते हैं। पर कोई भी ऐसी निरर्थक बातों के साथ ना आए कि वह एक महान नैतिक शिक्षक है। उसने हमारे लिए दूसरा विकल्प नहीं छोड़ा हैं।''

यीशु मसीह सामने और मध्य

विश्वासी कौन है ?

''विश्वासी वह है जिसने अपना जीवन मसीह को समर्पित कर दिया है, जो उससे प्रेम करता उस पर उद्धारकर्ता के रूप में भरोसा करता और प्रभु की तरह उसका आज्ञाकारी है।''

यीशु मसीह नामक व्यक्ति हमारी परिभाषा का केन्द्र है और उसका नहीं

शिक्षांए

आश्चर्यकम

धर्मसिद्धान्त

हमारे व्यक्तिगत समपर्ण के कम से कम तीन आयाम है :

. **यीशु मसीह के लिए व्यक्तिगत प्रेम**

(क) क्योकि वह हमसे प्रेम करता हैः
हम उससे प्रेम करते हैं क्योकि पहले उसने हमसे प्रेम किया — 1यहून्ना 4:19

परन्तु परमेश्वर ने अपना प्रेम इस संसार पर प्रगट किया कि जब हम पापी ही थे तब यीशु हमारे लिए मरा — रोमियों 5:8

(ख) क्योंकि उसने अपने आप को हमारे लिए दे दिया।

(ग) क्योंकि हम उसे जान जाते हैं।

. **उद्धारकर्ता के रूप में उस पर भरोसा**

(क) हमें वह क्यों उद्धारकर्ता के रूप में आवश्यक है ?

1. उत्पति 3 में पा **प** ..... की कहानी
2. पाप क्या है

क. **चूकना** .....

''क्योंकि जो कोई सारी व्यवस्था का पालन करता है और वह एक ही बात में चूक जाए तो वह दोषी ठहरता है।'' — याकूब 2:10

ख. **निषेद** .....

''...जो भलाई करना जानता है और नहीं करता वह पाप करता है।'' — याकूब 4:17

ग. अविश्वास : सबसे बड़ा पाप

''जो उस पर विश्वास करता है उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं है, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका है इसलिए कि उसने परमेश्वर के इकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया।'' — यहून्ना 3:18

आईये अब हम यीशु मसीह से अपने सम्बंधों के बारे में बातचीत करें। हम इस बात पर ध्यान दे रहे हैं कि यीशु मसीह का व्यक्तित्व मसीहत की परिभाषा का केन्द्र हैं।

- यह उसकी **शिक्षांए** नहीं भले ही उसकी शिक्षांए कितनी भी अद्‌भुत क्यों न हों

- यह उसके **आश्चर्यकम** नहीं यद्यपि किसी ने भी उससे बढ़कर आश्चर्यकम नहीं किए।

- यह उसके **धर्मसिद्धान्त** भी नहीं यद्यपि धर्मसिद्धान्त जो यीशु की शिक्षाओं से आए हैं अत्यन्त प्रभावशाली हैं और हमें उन्हें जानने की जरूरत है।

परन्तु यह हमारा यीशु के साथ व्यक्तिगत सम्बंध है ।

सबसे पहले एक विशवासी वह हैं जो यीशु को प्रेम करता है कुछ लोग कहते हैं कि, ''हम यीशु को कैसे प्रेम कर सकते हैं क्योंकि वह 2010 साल पहले रहा था ?''

एक विश्वासी के पास यीशु को प्रेम करने के लिए तीन कारण हैं :

(क) क्योंकि, उसने हमसे प्रेम किया। उसने सबसे पहले हमसे प्रेम किया; और उसने हमसे तब प्रेम किया जब हम पापी ही थे। (1यहून्ना 4:19; रोमियों 5:8)

(ख) न केवल उसने हमसे पहले प्रेम किया, पर उसने हमें अपने आप को दे दिया। इतिहास में और कोई व्यक्ति ऐसा नहीं हुआ जिसने अपने आप को हमारे लिए दिया हो।

यदि हम एक ऐसे भवन में हों जिसमे आग लगी हुई हो और कोई आकर हमें बचा ले, और यदि वह आकर हमें नहीं बचाता तो हम मर जाते। इस बचाने के काम में वो खुद आग में जलते हुए हमारे लिए मर गए, क्या हम अपने दिलों में उनके लिए कुछ नहीं महसुस करेंगे? भले ही हम उन्हें बिल्कुल न जानते हो, परन्तु क्योंकि उन्होंने हमारे लिए अपना जीवन दिया इसलिए हम उन्हे प्रेम करेंगे। अब परमेश्वर के बारे में सोचिऐ। जब अनन्त परमेश्वर हमारे लिए मनुष्य बना और हमारे बीच में रहा, और उसने हमारे लिए अपना जीवन दिया क्योंकि वह हमें प्रेम करता है, फिर क्यों न हम उसे प्रेम करेंगे? निसंदेह हम करेंगे। इसलिए हम उसे प्रेम करेगें क्योंकि उसने हमें प्रेम किया और हमारे लिए अपने आप को दे दिया।

यीशु मसीह सामने और मध्य

विश्वासी कौन है ?

''विश्वासी वह है जिसने अपना जीवन मसीह को समर्पित कर दिया है, जो उससे प्रेम करता उस पर उद्धारकर्ता के रूप में भरोसा करता और प्रभु की तरह उसका आज्ञाकारी है।''

यीशु मसीह नामक व्यक्ति हमारी परिभाषा का केन्द्र है और उसका नहीं

शिक्षांए
आश्चर्यकम
धर्मसिद्धान्त

हमारे व्यक्तिगत समपर्ण के कम से कम तीन आयाम है :

. **यीशु मसीह के लिए व्यक्तिगत प्रेम**

(क) क्योकि वह हमसे प्रेम करता हैः
हम उससे प्रेम करते हैं क्योकि पहले उसने हमसे प्रेम किया — 1यहून्ना 4:19

परन्तु परमेश्वर ने अपना प्रेम इस संसार पर प्रगट किया कि जब हम पापी ही थे तब यीशु हमारे लिए मरा — रोमियों 5:8

(ख) क्योंकि उसने अपने आप को हमारे लिए दे दिया।

(ग) क्योंकि हम उसे जान जाते हैं।

. **उद्धारकर्ता के रूप में उस पर भरोसा**

(क) हमें वह क्यों उद्धारकर्ता के रूप में आवश्यक है ?

1. उत्पति 3 में पा **प** ..... की कहानी
2. पाप क्या है

क. **चूकना**.....

''क्योंकि जो कोई सारी व्यवस्था का पालन करता है और वह एक ही बात में चूक जाए तो वह दोषी ठहरता है।'' — याकूब 2:10

ख. **निषेद**.....

''...जो भलाई करना जानता है और नहीं करता वह पाप करता है।'' — याकूब 4:17

ग. अविश्वास : सबसे बड़ा पाप

''जो उस पर विश्वास करता है उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं है, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका है इसलिए कि उसने परमेश्वर के इकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया।'' — यहून्ना 3:18

(ग) जितना अधिक आप यीशु को जानते हैं, उतना अधिक आप यीशु को प्रेम करेंगे

- आप में से कितने यीशु को जानते हैं और उसे पिछले 20 सालों से प्रेम कर रहें ?

- आप में कितने हुं जो उसे 15 साल पहले से अधिक प्रेम करते हैं? हाँ, मैं तो करता हुं इसका कारण ये हैं कि मैं उसे पहले से बेहतर जानता हूं।

- यही बात मेरी पत्नी के साथ में भी है। जब मैंने उससे विवाह किया उसके बाद से अब मैं उसे अधिक प्रेम करता हूं। परन्तु इस प्रक्रिया में हमारे पास बच्चे आ गए, बीमारी में हमने एक दूसरे की देखभाल की, हमने अच्छे और बुरे समय को साथ–2 निभाया है, हमने छुटिटयां एक साथ काटीं हैं, हमनें एक साथ घर खरीदा और इस तरह जितना अधिक मैंने उसके साथ जीवन का अनुभव किया उतना अधिक वह मेर जीवन का हिस्सा बनती चली गई, और मैं उसे उतना अधिक प्रेम करता चला गया।

कुछ लोग कहते हैं, ''मुझे आश्चर्य होता हैं एक विश्वासी होने के नाते मैं यीशु को उतना प्रेम नहीं करता जितना मुझे करना चहिए?'' यहां पर ऐसा कुछ नहीं हैं जो ये कहता हो कि यीशु को आप उतना प्रेम करें जितना करना चाहिए। मैं मनुष्य हूं और इस नाते मैं यीशु को उतना प्रेम नहीं कर सकता जितना करना चाहिए, पर मैं उसे प्रेम करता हूं, और मैं उसे हर समय अधिक प्रेम करता हूं। प्रेम वो चीज़ हैं जो बढ़ती चली जाती है।

<u>इसलिए एक विश्वासी वह हैं जो यीशु को प्रेम करता है और उसका यह प्रेम बढ़ता रहता है।</u>

यीशु मसीह सामने और मध्य

विश्वासी कौन है ?

''विश्वासी वह है जिसने अपना जीवन मसीह को समर्पित कर दिया है, जो उससे प्रेम करता उस पर उद्धारकर्ता के रूप में भरोसा करता और प्रभु की तरह उसका आज्ञाकारी है।''

यीशु मसीह नामक व्यक्ति हमारी परिभाषा का केन्द्र है और उसका नहीं

शिक्षांए
आश्चर्यकम
धर्मसिद्धान्त

हमारे व्यक्तिगत समपर्ण के कम से कम तीन आयाम है :

. **यीशु मसीह के लिए व्यक्तिगत प्रेम**

(क) क्योकि वह हमसे प्रेम करता हैः
हम उससे प्रेम करते हैं क्योकि पहले उसने हमसे प्रेम किया — 1यहून्ना 4:19

परन्तु परमेश्वर ने अपना प्रेम इस संसार पर प्रगट किया कि जब हम पापी ही थे तब यीशु हमारे लिए मरा — रोमियों 5:8

(ख) क्योंकि उसने अपने आप को हमारे लिए दे दिया।

(ग) क्योंकि हम उसे जान जाते हैं।

. **उद्धारकर्ता के रूप में उस पर भरोसा**

(क) हमें वह क्यों उद्धारकर्ता के रूप में आवश्यक है ?

1. उत्पति 3 में पा **प** ..... की कहानी
2. पाप क्या है

क. **चूकना** .....

''क्योंकि जो कोई सारी व्यवस्था का पालन करता है और वह एक ही बात में चूक जाए तो वह दोषी ठहरता है।'' — याकूब 2:10

ख. **निषेद** .....

''...जो भलाई करना जानता है और नहीं करता वह पाप करता है।'' — याकूब 4:17

ग. अविश्वास : सबसे बड़ा पाप

''जो उस पर विश्वास करता है उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं है, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका है इसलिए कि उसने परमेश्वर के इकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया।'' — यहून्ना 3:18

यीशु पर हमारे व्यक्तिगत समर्पण का दूसरा आयाम यह हैं कि हम उस पर उद्धारकर्ता के रूप में भरोसा करते हैं।

पाप वह कारण है जिसकी वजह से लोगों को यीशु के उद्धारकर्ता होने पर भरोसा करने की जरूरत है।

पाप का केन्द्र **मैं** में है। परमेश्वर और दूसरों से पहले अपने आप को रखना।

1. उत्पति 3 में **पाप** ..... की कहानी
    - आप आदम और हव्वा की कहानी को जानते हैं उनका परमेश्वर के साथ अद्‌भुत प्रेम भरा सम्बंध था पर तब हव्वा ने यह निर्णय लिया कि वह, वह काम करें जिसके लिए परमेश्वर ने उन्हें मना किया था। इसलिए उसने तुरन्त अपने दिल में यह निर्णय लिया कि परमेश्वर की बजाए अपने आप को प्रथम स्थान पर रखे और यह पाप है।

जो कोई पाप करता है वह अपने आपको प्रथम स्थान पर रखता है। संसार की हर समस्या का केन्द्र स्वय को प्रथम स्थान पर रखना है।

- यही है वैवाहिक समस्यों की जड़।
- यही है जो पारिवारिक जीवन में परेशानीयों का आरम्भ करता है।
- यही है हमारे शहर या गांव में कठिनाईयों का स्रोत ।
- यही है हमारे समाज में समस्याओं का स्रोत।
- यही है हमारे राष्ट्रों में द्वंदों का स्रोत ।
- एक व्यक्ति या कुछ लोग ये कहते हैं, ''हम स्वयं को प्रथम स्थान पर रखेंगे; हम न. 1 हैं।'' और देखिए परिणाम क्या होता है ।

यीशु मसीह सामने और मध्य

विश्वासी कौन है ?

''विश्वासी वह है जिसने अपना जीवन मसीह को समर्पित कर दिया है, जो उससे प्रेम करता उस पर उद्धारकर्ता के रूप में भरोसा करता और प्रभु की तरह उसका आज्ञाकारी है।''

यीशु मसीह नामेक व्यक्ति हमारी परिभाषा का केन्द्र है और उसका नहीं

शिक्षांए
आश्चर्यकम
धर्मसिद्धान्त

हमारे व्यक्तिगत समपर्ण के कम से कम तीन आयाम है :

. **यीशु मसीह के लिए व्यक्तिगत प्रेम**

(क) क्योकि वह हमसे प्रेम करता हैः
हम उससे प्रेम करते हैं क्योकि पहले उसने हमसे प्रेम किया — 1यहून्ना 4:19

परन्तु परमेश्वर ने अपना प्रेम इस संसार पर प्रगट किया कि जब हम पापी ही थे तब यीशु हमारे लिए मरा — रोमियों 5:8

(ख) क्योंकि उसने अपने आप को हमारे लिए दे दिया।

(ग) क्योंकि हम उसे जान जाते हैं।

. **उद्धारकर्ता के रूप में उस पर भरोसा**

(क) हमें वह क्यों उद्धारकर्ता के रूप में आवश्यक है ?

1. उत्पति 3 में पा **प** ..... की कहानी
2. पाप क्या है

क. **चूकना** .....

''क्योंकि जो कोई सारी व्यवस्था का पालन करता है और वह एक ही बात में चूक जाए तो वह दोषी ठहरता है।'' — याकूब 2:10

ख. **निषेद** .....

''...जो भलाई करना जानता है और नहीं करता वह पाप करता है।'' — याकूब 4:17

ग. अविश्वास : सबसे बड़ा पाप

''जो उस पर विश्वास करता है उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं है, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका है इसलिए कि उसने परमेश्वर के इकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया।'' — यहून्ना 3:18

ऐसे तीन क्षेत्र हैं जिनमें हम पाप करते हैं।

- **<u>चूकना</u>** ...''क्योंकि जो कोई सारी व्यवस्था का पालन करता है और वह एक ही बात में चूक जाए तो वह दोषी ठहरता है।'' हम ऐसे काम करते हैं जो हमें नहीं करने चाहिएं।

- **<u>निषेद</u>** ... ये वे काम हैं जो हमें नहीं करने चाहिएं। याकुब... ''जो भलाई करना जानता है और नहीं करता वह पाप करता है''

- **<u>अविश्वास</u>** .... सबसे बड़ा पाप है क्योंकि इसका परिणाम दण्ड होता है

यीशु मसीह सामने और मध्य

विश्वासी कौन है ?

''विश्वासी वह है जिसने अपना जीवन मसीह को समर्पित कर दिया है, जो उससे प्रेम करता उस पर उद्धारकर्ता के रूप में भरोसा करता और प्रभु की तरह उसका आज्ञाकारी है।''

यीशु मसीह नामक व्यक्ति हमारी परिभाषा का केन्द्र है और उसका नहीं

शिक्षांए
आश्चर्यकम
धर्मसिद्धान्त

हमारे व्यक्तिगत समपर्ण के कम से कम तीन आयाम है :

. **यीशु मसीह के लिए व्यक्तिगत प्रेम**

(क) क्योकि वह हमसे प्रेम करता हैः
हम उससे प्रेम करते हैं क्योकि पहले उसने हमसे प्रेम किया — 1यहून्ना 4:19

परन्तु परमेश्वर ने अपना प्रेम इस संसार पर प्रगट किया कि जब हम पापी ही थे तब यीशु हमारे लिए मरा — रोमियों 5:8

(ख) क्योंकि उसने अपने आप को हमारे लिए दे दिया।

(ग) क्योंकि हम उसे जान जाते हैं।

. **उद्धारकर्ता के रूप में उस पर भरोसा**

(क) हमें वह क्यों उद्धारकर्ता के रूप में आवश्यक है ?

1. उत्पति 3 में पा**प** की कहानी
2. पाप क्या है

क. **चूकना**

''क्योंकि जो कोई सारी व्यवस्था का पालन करता है और वह एक ही बात में चूक जाए तो वह दोषी ठहरता है।'' — याकूब 2:10

ख. **निषेद**

''...जो भलाई करना जानता है और नहीं करता वह पाप करता है।'' — याकूब 4:17

ग. अविश्वास : सबसे बड़ा पाप

''जो उस पर विश्वास करता है उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं है, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका है इसलिए कि उसने परमेश्वर के इकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया।'' — यहून्ना 3:18

अब आपके लिए यीशु मसीह में शुभ संदेश है।

- आप अपनी प्रशिक्षण पुस्तिका में देखिए पवित्र परमेश्वर और पापमय मनुष्य के बीच रिक्त स्थान अर्थात् खाई को दिखाया गया है

  ''परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों/अपराधों ने तुमको परमेश्वर से अलग कर दिया है और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुंह तुमसे ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता।'' यशायाह 56:2

- यह खाई भर दी गई है परन्तु इस परमेश्वर के काम के द्वारा भरा गया है, न कि मनुष्यों के कामों के द्वारा।

- विश्व के सभी धर्म आधारमय रूप से इस कोशिश में लगें हैं कि अपने आप को परमेश्वर के सामने प्रस्तुत कर सकें। कुछ लोग नियमित रूप से उपवास और प्रार्थना करते है; कुछ तीर्थ यात्रा पर चले जाते हैं; कुछ जलते हुए कोयलों पर चलते है; कुछ मुर्तियो को बड़ा दान चढ़ाते हैं। कुछ सावधानीपूर्वक व्यवस्थाओं और धार्मिक कर्मकान्डों की पालना करते हैं।

- यहां पर प्रभु यीशु मसीह के शुभ संदेश में और संसार के दूसरे धर्मों के बीच एक भिन्नता है। यह शुभ संदेश – परमेश्वर ने खाई को भर दिया है! यह खाई परमेश्वर की ओर से भरी गई है न कि मनुष्य की ओर से।

- परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि अपना इकलौता पुत्र दे दिया। इस तरह परमेश्वर नीचे आ गया कि हमारे उद्धार का प्रबन्ध करे, बजाए उसके कि वह यह आशा करता कि हम उस तक पहुचें।

और किसे जरूरत है कि परमेश्वर नीचे आए और उन्हे बचाए?

- आपकी प्रशिक्षण पुस्तिका में चौथी (4) बात यह कहती है कि ''सबने ''... ''सबने पाप किया और सब परमेश्वर की महिमा से रहित है।''

- इसका कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे कितने धनी हैं; इसका कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे कितने शिक्षित या अशिक्षित हैं; इसका कोई फर्क नहीं पड़ता कि उनकी कौन सी पारिवारीक पृष्ठभुमि है।

- ''सबने पाप किया और सब परमेश्वर की महिमा से रहित है।''

- और इसका कारण यह है कि हम सबके जीवन में एक ''सिहांसन'' है। यह सिहांसन वह स्थान है जहां पर हम सब फैंसले लेते हैं। जहां से हमारा जीवन संचालित होता है। अब उस व्यक्ति के बारे में साचिए जिसके जीवन में यीशु उद्धारकर्ता के रूप में नहीं है, उसके जीवन के सिहांसन पर कौन बैठा है? वह ''मैं'' (स्वयम्) अपने जीवन के सिहांसन पर बैठे हैं। मैं न. 1... मेरा अहम! वे भले ही पूरे अविश्वासी न हो; वे प्रभु को जानते हों, वे यीशु को आदर भी करते होंगे, परन्तु यीशु उनके जीवन से बाहर है; यीशु उनके जीवन के सिहांसन पर विराजमान नहीं है। जब तक यीशु को सिहांसन पर बैठने का निमंत्रण नहीं दिया जाता, हम बच नहीं सकते, हम विश्वासी नहीं हो सकते।

इसलिए, उत्तर यीशु है। वह हमारा उद्धारकर्ता बना। उसका कुस पवित्र परमेश्वर और पापमय मनुष्य के बीच की खाई को भर देता है।

3. पाप क्या करता है

परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुमको परमेश्वर से अलग कर दिया है और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुंह तुमसे ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता। — यशायाह 56:2

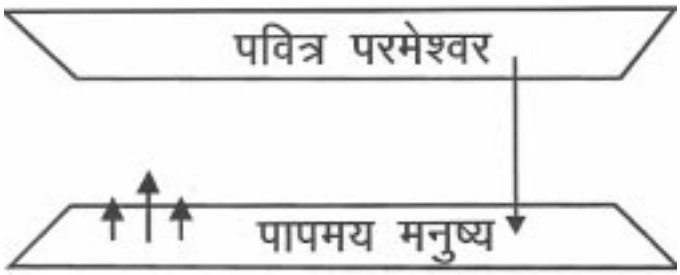

4. किसने पाप किया

''...सबने पाप किया और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं'' — रोमियों 3:23

5. पाप अपने स्वंय द्वारा निर्धारित राह पर चलते जाना है

''यहां आपके जीवन का एक सिंहासन है या तो उस पर परमेश्पर बैठा है या उस पर आप स्वयम बैठे हैं। यदि आप कह रहें हैं कि मैं अपने जीवन का स्वामी हुं मैं जैसा चाहुगां करूंगा तो आप एक पापी ठहरेंगे''।

बिल ब्राईट — ''यीशु की विशेषतांए''

(ख) उसने हमें बचाने के लिए क्या किया?

1. वह हमारे बदले में मरा

जीवन में — फिलिप्पियों 2:5—10; यहून्ना 8:46; रोमियों 5:8—10; इब्रानियों 5:7—9

मत्यु में — रोमियों 5:8; यशायाह 53; 1पतरस 2:21—24

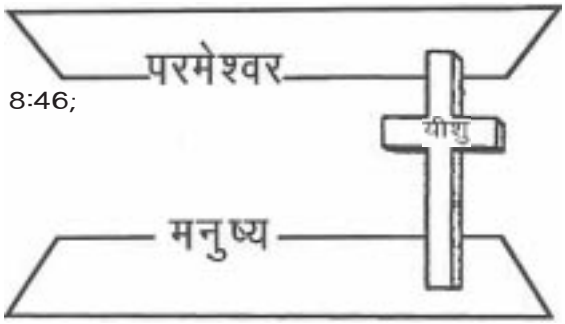

2. केवल वही हमारे पाप क्षमा कर सकता है और उद्धार दे सकता हैः

यीशु ने उससे कहा, ''मैं मार्ग सच्चाई और जीवन हूं, कोई बिना मेरे पिता के पास नहीं जा सकता'' यहून्ना 14:6

और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं, क्योंकि स्वर्ग के नीचे और मनुष्यों में ओर कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया जिसके द्वारा उद्धार हो सके — प्रेरित 4:12

आईये इस बात को समझें कि उसने हमें बचाने के लिए क्या किया।

वह हमारे बदले में मरा (वह हमारा विकल्प ठहरा)

- किसी एक खेल की घटना को याद करें। कोई खेल खेल रहा है परन्तु वह अच्छी तरह से नहीं खेल पा रहा जैसा उसे खेलना चाहिए, इसलिए उसके बदले में किसी दूसरे खिलाड़ी को भेज दिया जाता है। वह खिलाड़ी उसका विकल्प ठहरता है।

- यही परमेश्वर ने हमारे जीवन में किया। उसने यीशु को इस संसार में हमारा विकल्प होने के लिए भेजा, हमारा स्थान लेने कि लिए, जीवन जो उसने जीया और मृत्यु में जैसे वह मरा दोनों में वह हमारा विकल्प ठहरा।

- किसने इतना सिद्ध जीवन जीया : केवल यीशु ने। उसने अपने शत्रुओ से कहा ''कौन मुझे पापी ठहराता है? ''और उनके पास कोई उत्तर नहीं था। वही केवल पवित्र था। इसलिए उसे अपने पापों के लिए मरने की जरूरत नहीं थी, परन्तु उसने हमारे पापों के लिए मरना चुना।

- इस तरह वह हमारा स्थान लेता है, और वह इस तरह से सिद्ध जीवन व्यतीत करता है जैसा हममें से कोई भी अभी तक नहीं कर पाया, और वह हमारे पापों के लिए जो हमने किए है, हमारे स्थान पर मरता है। इस तरह से वह हमारा विकल्प ठरता है।

- वह धरती पर आया ताकि हम स्वर्ग जा सकें।

- वह हमारे लिए मरा ताकि हम जी सकें।

- वह हमारे लिए पाप ठहरा ताकि हम परमेश्वर की धार्मिकता ठहरें।

- वह हमारे लिए निर्धन बना ताकि हम धनी हो जांए।

- वह हमारे स्थान पर क्रुस पर चढ़ा, ताकि हम उसके साथ स्वर्ग में बैठ सकें।

3. पाप क्या करता है

परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुमको परमेश्वर से अलग कर दिया है और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुंह तुमसे ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता। — यशायाह 56:2

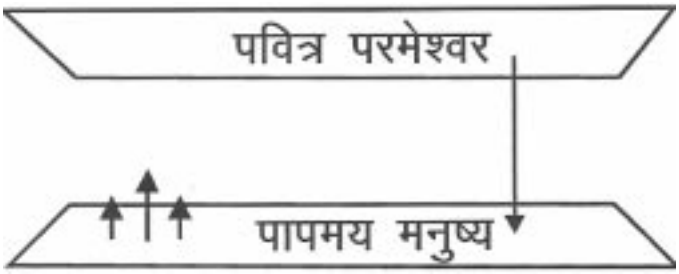

4. किसने पाप किया

''...सबने पाप किया और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं'' — रोमियों 3:23

5. पाप अपने स्वंय द्वारा निर्धारित राह पर चलते जाना है

''यहां आपके जीवन का एक सिंहासन है या तो उस पर परमेश्पर बैठा है या उस पर आप स्वयम बैठे हैं। यदि आप कह रहें हैं कि मैं अपने जीवन का स्वामी हुं मैं जैसा चाहुगां करूंगा तो आप एक पापी ठहरेंगे''।

बिल ब्राईट — ''यीशु की विशेषतांए''

(ख) उसने हमें बचाने के लिए क्या किया?

1. वह हमारे बदले में मरा

जीवन में — फिलिप्पियों 2:5—10; यहून्ना 8:46; रोमियों 5:8—10; इब्रानियों 5:7—9

मत्यु में — रोमियों 5:8; यशायाह 53; 1पतरस 2:21—24

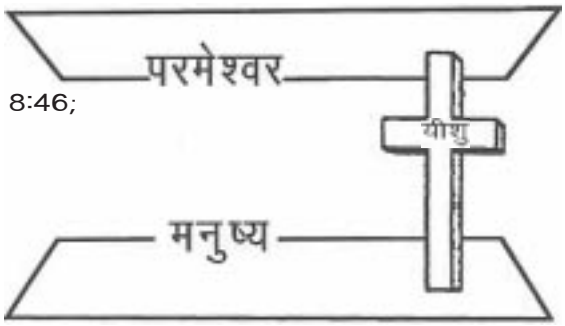

2. केवल वही हमारे पाप क्षमा कर सकता है और उद्धार दे सकता है:

यीशु ने उससे कहा, ''मैं मार्ग सच्चाई और जीवन हूं, कोई बिना मेरे पिता के पास नहीं जा सकता'' यहून्ना 14:6

और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं, क्योंकि स्वर्ग के नीचे और मनुष्यों में ओर कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया जिसके द्वारा उद्धार हो सके — प्रेरित 4:12

वही केवल हमें क्षमा कर सकता है और उद्धार दे सकता है।

- प्रशिक्षण पुस्तिका में नीचे पृष्ठ में देखें, यीशु ने उससे कहा, ''मैं मार्ग, सच्चाई और जीवन हूं, कोई बिना मेरे पिता के पास नहीं जा सकता।'' यहून्ना 14:6

प्रेरित 4:12 कहता है, ''और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं, क्योंकि स्वर्ग के नीचे और मनुष्यों में ओर कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया जिसके द्वारा उद्धार हो सके।''

3. पाप क्या करता है

परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुमको परमेश्वर से अलग कर दिया है और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुंह तुमसे ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता। — यशायाह 56:2

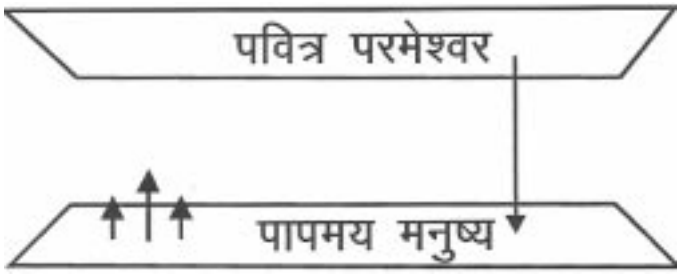

4. किसने पाप किया

''...सबने पाप किया और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं'' — रोमियों 3:23

5. पाप अपने स्वंय द्वारा निर्धारित राह पर चलते जाना है

''यहां आपके जीवन का एक सिंहासन है या तो उस पर परमेश्पर बैठा है या उस पर आप स्वयम बैठे हैं। यदि आप कह रहें हैं कि मैं अपने जीवन का स्वामी हुं मैं जैसा चाहुगां करूंगा तो आप एक पापी ठहरेंगे''।

बिल ब्राईट — ''यीशु की विशेषतांए''

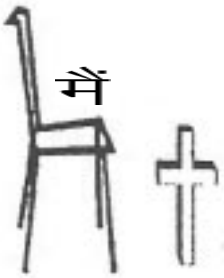

(ख) उसने हमें बचाने के लिए क्या किया?

1. वह हमारे बदले में मरा

जीवन में — फिलिप्पियों 2:5—10; यहून्ना 8:46; रोमियों 5:8—10; इब्रानियों 5:7—9

मत्यु में — रोमियों 5:8; यशायाह 53; 1पतरस 2:21—24

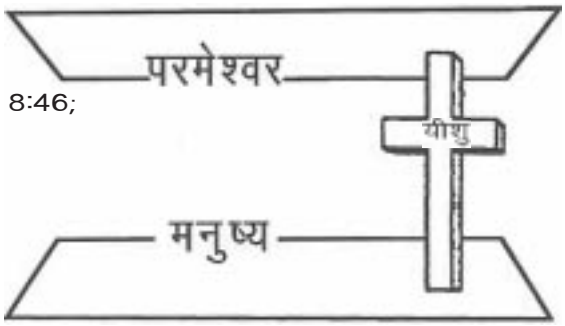

2. केवल वही हमारे पाप क्षमा कर सकता है और उद्धार दे सकता हैः

यीशु ने उससे कहा, ''मैं मार्ग सच्चाई और जीवन हूं, कोई बिना मेरे पिता के पास नहीं जा सकता'' यहून्ना 14:6

और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं, क्योंकि स्वर्ग के नीचे और मनुष्यों में ओर कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया जिसके द्वारा उद्धार हो सके — प्रेरित 4:12

अब हम इस विकल्प, यीशु पर कैसे भरोसा कर सकते हैं? यीशु पर भरोसा रखने के लिए कम से कम तीन महत्वपूर्ण कदम हैं।

प्रथम, हमें **<u>पश्चाताप करना</u>** चाहिए।

यह समझना महतवपूर्ण है कि पश्चाताप क्या है।

- इसका अर्थ है कि अपने जीवन के रास्ते को बदलना; अपनी दिशा और अपनी योजनाओं को बदलना ।

- यह आपके दिल के इरादे से आरम्भ से होता है, और तब एक नए रास्ते पर चलने एक नई दिशा में चलना के द्वारा इसका अनुवर्तन होता है।

आईये मैं आपको धरती पर पैदा हुए पहले बच्चों के बारे में याद दिलाऊं... दो लड़के, केन और हाबिल। अब केन ऐसी मनुष्य जाति जो पश्चाताप नहीं करती का सही उदाहरण है।
केन एक किसान था, और परमेश्वर ने उससे कहा, ''मैं चाहता हूं कि तू मेरे लिए भेड़ का बलिदान करके मेरी आराधना कर।''

- परन्तु केन ने यह निर्णय लिया कि वह परमेश्वर को अपनी सब्जीयों मे से कुछ भेंट चढ़ाऐगा। ''यह मेरे लिए अधिक अर्थ रखने वाली बात होगी। मैं परमेश्वर को अपनी सबसे अच्छी सब्जीयों में से लाकर दूंगा। ''केन ने निर्णय लिया। इसलिए वह परमेश्वर को भेट चढ़ाने के लिए अपनी सब्जीयों में से ले आया।

- जबकि हाबिल, केन का भाई, जैसा परमेश्वर ने निर्देश दिया था वैसे ही भेड़ को लेकर आया।

- परमेश्वर ने हाबिल के बलिदान को ग्रहण किया, परन्तु केन के बलिदान को ग्रहण नहीं किया।

- अब केन अपने जीवन के नाजुक क्षण में है। वह अपने दिल को नम्र कर सकता था और कह सकता था, ''मैं वही करूंगा जो परमेश्वर आप चाहते हैं, मैं जाकर एक मेमने को लाऊंगा ओर बलिदान चढ़ांऊगा।'' परन्तु उसने वैसा नहीं किया। वह वही करना चाहता था जो उसकी इच्छा थी। वह बहुत गुस्से में आ गया और उसने अपने भाई का कत्ल कर दिया जिसके बलिदान को परमेश्वर ने ग्रहण किया था।

- यह न पश्चाताप करने वाले दिल के बिल्कुल उल्ट है

(ग). एक उद्धारकर्ता के रूप में हम उस पर किस प्रकार भरोसा कर सकते हैं?

1. हमें .....**पश्चाताप करना**.....चाहिए मरकुस 1:15

2. हमें .....**विश्वास करना**.....चाहिए प्रेरित 16:31; 1 कुरिन्थियों 15:1–6

3. हमें .....**समर्पण करना**.....चाहिए

''पर जितनों ने उसे ग्रहण किया उसने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया अर्थात उन्हे जो उसके नाम पर विश्वास करते हैं''।
– यहून्ना 1:12 (प्रकाशित वाक्य 3:20; गलातियों 2:20)

यह हमारे सम्पूर्ण व्यक्तित्व के समपर्ण को शामिल करता है :

– हमारी बुद्धि

– हमारी भावनाएं

– हमारी इच्छाएं

समापन :

जो कुछ भी आपने मसीह के बारे में सीखा है ये थोड़ी ही मदद करेगा जब तक कि आप मसीह से भेंट न कर लें। ये काफी नहीं कि कोई मसीह के बारे में जान लें, यीशु ने कहा, ''हरेक नहीं जो मुझे हे प्रभु, हे प्रभु कह कर पुकारता है स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करेगा... उस दिन बहुत से मुझसे कहेंगे, ''प्रभु, प्रभु क्या... बहुत से सामर्थ के काम तेरे नाम से नहीं किए? परन्तु मैं उतर दूंगा, ''तुम मेरे कभी नहीं रहे, मैंने तुम्हें कभी नहीं जाना, यहां से चले जाओ ...।''

ये सम्भव है कि मसीह से आपकी भेंट हो जाए। उसे आपके अन्दर आकर रहना है इसलिए कि आप विश्वासी हो जाएं। मसीही जीवन मसीह की तरह होना या नकल करना नहीं है, पर यहां मसीह अपना जीवन एक विश्वासी में लगाता और उसके जीवन द्वारा अपना जीवन जीता है आपको मसीह को व्यक्तिगत रूप से जानना चाहिए। यदि आप उससे पहले कभी नहीं मिले हैं तो आप उससे अभी मिल सकते हैं।

पश्चाताप इस तरह होता है :

- मैं जीवन के रास्ते पर चला जा रहा हूं, पर तब अचानक मैं यह चुनता हूं। मैं यह महसुस करना शुरू करता हूं शायद जिस रास्ते पर मैं चल रहा हूं उस रास्ते पर मुझे नहीं चलना चाहिए।

- मैं एक शुभ संदेश को सुनता हूं या कोई मुझे यीशु के बारे में बताता है, और मैं यह सोचना आरम्भ करता हूं शायद मुझे इस रास्ते पर चलना चाहिए।

- परन्तु मैं उसी रास्ते पर चलता चला जाता हूं जिसे मैने चुना था।

- और तब मैं एक मसीही सभा में जाता हूं, और पवित्रआत्मा मुझे कायल करता है। हो सकता है मैं कुछ आंसु बहा दूं, पर अगले दिन मैं यह पाता हूं कि मैं अभी भी उसी रास्ते पर चल रहा हूं।

- यह वह रास्ता है जिसमें मैं अपने आप को सुविधाजनक पाता हूं। यह वह रास्ता हैं जिस पर मेरे पूर्वज होकर गए हैं, मैं और किसी रास्ते को असल में नहीं जानता हूं इसलिए मैं इस पर चलता चला जाता हूं।

- मुझे समझ आता है, मेरा दिल भी हिल गया है, परन्तु मैंने पश्चाताप नहीं किया, जब तक... एक दिन, मैं फैंसला करता हूं, ''मैं अब कभी इस रास्ते पर फिर नहीं चलुंगा। मैं एकदम दिशा परिवर्तित कर रहा हूं और यीशु के रास्ते में चलुंगा।''

- अब यह पश्चाताप है।

- जब तक हम पश्चाताप नहीं कर लेते, यीशु हमें नहीं बचा सकता। हम केवल यीशु की ओर देखने की बजाए हमेशा स्वंय को देखते रहेंगे, या फिर कुछ दूसरे लोंगों को, या फिर कोई दूसरे रास्ते को जो हमें बचा सके। इसलिए सबसे पहले हमें पश्चाताप करने की जरूरत है।

हमें चाहिए **<u>विश्वास करना</u>**।

हमें क्या विश्वास करना है? क्या हमें पूरी बाइबल पर विश्वास करना है? नहीं। बिल्कुल नहीं, जितना अधिक हम बाइबल को जानते हैं, उतना अच्छा हमारे लिए है। परन्तु उद्धार पाने के लिए हमें वास्तव में क्या विश्वास करना है, सन्त पौलुस 1कुरिन्थियो 15:1—6 में ऐसा कहते हैं :

- यीशु परमेश्वर का पुत्र था।

- यीशु इस धरती पर आया।

- उसने हमारा स्थान लिया। वह हमारे बदले मरा।

- वह जी उठा और पिता के पास वापस चला गया।

- और यदि हम उस में विश्वास करें, तो वह हमें पापों से क्षमा करेगा और बचा लेगा।

(ग). एक उद्धारकर्ता के रूप में हम उस पर किस प्रकार भरोसा कर सकते हैं?

1. हमें .....**पश्चाताप करना**.....चाहिए मरकुस 1:15

2. हमें .....**विश्वास करना**.....चाहिए प्रेरित 16:31; 1 कुरिन्थियों 15:1–6

3. हमें .....**समर्पण करना**.....चाहिए

''पर जितनों ने उसे ग्रहण किया उसने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया अर्थात उन्हे जो उसके नाम पर विश्वास करते हैं''।
– यहून्ना 1:12 (प्रकाशित वाक्य 3:20; गलातियों 2:20)

यह हमारे सम्पूर्ण व्यक्तित्व के समपर्ण को शामिल करता है :

– हमारी बुद्धि

– हमारी भावनाऐ

– हमारी इच्छाएं

समापन :

जो कुछ भी आपने मसीह के बारे में सीखा है ये थोड़ी ही मदद करेगा जब तक कि आप मसीह से भेंट न कर लें। ये काफी नहीं कि कोई मसीह के बारे में जान लें, यीशु ने कहा, ''हरेक नहीं जो मुझे हे प्रभु, हे प्रभु कह कर पुकारता है स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करेगा... उस दिन बहुत से मुझसे कहेंगे, ''प्रभु, प्रभु क्या... बहुत से सामर्थ के काम तेरे नाम से नहीं किए? परन्तु मैं उतर दूंगा, ''तुम मेरे कभी नहीं रहे, मैंने तुम्हें कभी नहीं जाना, यहां से चले जाओ ...।''

ये सम्भव है कि मसीह से आपकी भेंट हो जाए। उसे आपके अन्दर आकर रहना है इसलिए कि आप विश्वासी हो जाएं। मसीही जीवन मसीह की तरह होना या नकल करना नहीं है, पर यहां मसीह अपना जीवन एक विश्वासी में लगाता और उसके जीवन द्वारा अपना जीवन जीता है आपको मसीह को व्यक्तिगत रूप से जानना चाहिए। यदि आप उससे पहले कभी नहीं मिले हैं तो आप उससे अभी मिल सकते हैं।

पश्चाताप और विश्वास करने के बाद हमें यीशु को अपना उद्धारकर्ता मानते हुए **<u>समर्पण करना</u>** चाहिए।

> 1यहून्ना 1:12 कहता है कि, ''पर जितनों ने उसे ग्रहण किया उसने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया अर्थात उन्हे जो उसके नाम पर विश्वास करते हैं''

एक वो भी दिन था जब भाई ''जो'' वायु सेना में एक मसीह सेवक (चेपलिन) के रूप में कार्यरत था। उनके दल को महीने के अन्तिम सप्ताह में व्यायाम के लिए जाना पड़ता था। उसका लक्ष्य था कि कि कोई एक विमान चालक लड़ाकु जहाज में उसे सैर करा दे। परन्तु यह नियमां के विरूद्ध था। वह उनसे इसके लिए बार–2 निवेदन करता रहा। अन्त में एक दिन, उसके दल के नेता ने उसे बुलाया और कहा, ''क्या तुम जाने के लिए तैयार हो?'' और उसने कहा, ''हम लोग कहां पर जा रहें हैं?'' नेता ने कहा, ''ऊपर!'' भाई ''जो'' दोड़ते हुए हवाई जहाज के क्षेत्र मे आ गए। तब उनके नेता उन्हें लड़ाकु जहाज तक ले गये। वहां जहाज पर चहुंचने के लिए धरती पर एक सीढ़ी लगी हुई थी। अब उसे फैंसला करना था कि क्या वह वास्तव में जहाज की सैर करना चाहता था? क्या उसे विश्वास था कि दल का नेता एक अच्छा विमान चालक था? क्या उसे उन सभी मिस्त्रीयों पर विश्वास था जिन्होंने जहाज के लिए काम किया था? क्या उसने सोचा कि जब वह जहाज में होगा तो वह सुरक्षित उपर जाकर वापस आ जाएगा? वह कई सप्ताहों से कह रहा था कि वह सैर करना चाहता है, पर अब उसे जो कुछ वह कह रहा था उसके लिए समर्पण करने की जरूरत थी। वह कभी भी हवाई जहाज की सैर नहीं कर सकेगा जब तक कि वह अपने पहले पैर और उसके बाद दूसरे पैर को सीढ़ी पर नहीं रख लेता और विमान में चढ़ नहीं जाता।

और आप देखते हैं कि, इसी तरह से यीशु के साथ में हाता है

- हम विश्वास कर सकते हैं कि वह उद्धारकर्ता है।
- हम यह जान सकते हैं कि वह हमें सुरक्षित अनन्त जीवन की ओर ले जा सकता है।
- पर यह तब तक केवल समझ ही रहता है, यह तब तक प्रभावशाली नहीं होता है जब तक हम इसमें बैठ नहीं जाते।

जब यीशु ने शब्द ''विश्वास'' युनानी भाषा में कहा तो तब उस शब्द का अर्थ आपके दिमाग में विश्वास करने से बढ़कर है। इसका अर्थ पूर्ण रूप से अपने आप को ''समर्पण'' करना हैं, उस पर निर्भर होना है, उसमें ही केवल भरोसा रखना है।

यह बिल्कुल वैसे होता है जैसे कोई समुद्र मे मछली पकड़ने वाली नाव से गिर जाए, और वह डूब रहा हो तब कोई रस्सी को फेंक दे। डूबने वाला उस समय यह नहीं सोचता कि रस्सी कितनी मजबूत है, या फिर वह सही किस्म की रस्सी है या नहीं। नहीं, वह तो डूब रहा है इसलिए वह उस रस्सी को पकड़ लेता है क्योंकि यह बचने का केवल एक ही उपाय है।

मेरे साथ प्रशिक्षण पुस्तिका के पेज के नीचे समापन मे देखें।

(ग). एक उद्धारकर्ता के रूप में हम उस पर किस प्रकार भरोसा कर सकते हैं?

1. हमें .....**पश्चाताप करना**.....चाहिए मरकुस 1:15

2. हमें .....**विश्वास करना**.....चाहिए प्रेरित 16:31; 1 कुरिन्थियों 15:1–6

3. हमें .....**समर्पण करना**.....चाहिए

''पर जितनों ने उसे ग्रहण किया उसने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया अर्थात उन्हे जो उसके नाम पर विश्वास करते हैं''।
– यहून्ना 1:12 (प्रकाशित वाक्य 3:20; गलातियों 2:20)

यह हमारे सम्पूर्ण व्यक्तित्व के समपर्ण को शामिल करता है :

– हमारी बुद्धि

– हमारी भावनाऐ

– हमारी इच्छाएं

समापन :

जो कुछ भी आपने मसीह के बारे में सीखा है ये थोड़ी ही मदद करेगा जब तक कि आप मसीह से भेंट न कर लें। ये काफी नहीं कि कोई मसीह के बारे में जान लें, यीशु ने कहा, ''हरेक नहीं जो मुझे हे प्रभु, हे प्रभु कह कर पुकारता है स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करेगा... उस दिन बहुत से मुझसे कहेंगे, ''प्रभु, प्रभु क्या... बहुत से सामर्थ के काम तेरे नाम से नहीं किए? परन्तु मैं उतर दूंगा, ''तुम मेरे कभी नहीं रहे, मैंने तुम्हें कभी नहीं जाना, यहां से चले जाओ ...।''

ये सम्भव है कि मसीह से आपकी भेंट हो जाए। उसे आपके अन्दर आकर रहना है इसलिए कि आप विश्वासी हो जाएं। मसीही जीवन मसीह की तरह होना या नकल करना नहीं है, पर यहां मसीह अपना जीवन एक विश्वासी में लगाता और उसके जीवन द्वारा अपना जीवन जीता है आपको मसीह को व्यक्तिगत रूप से जानना चाहिए। यदि आप उससे पहले कभी नहीं मिले हैं तो आप उससे अभी मिल सकते हैं।

आप सभी ने यीशु मसीह के बारे में यह सीखा है कि यीशु आपके लिए कुछ अच्छा करेगा जब तक आप उसे असल में मिल नहीं लेते।

अगला सदंर्भ यह कहता है, ''ये सम्भव है कि मसीह से आपकी भेंट हो जाए। उसे आपके अन्दर आकर रहना है इसलिए कि आप विश्वासी हो जाएं। मसीही जीवन मसीह की तरह होना या नकल करना नहीं है, पर ये उसका जीवन जो आपके अन्दर आता है और वास करता है आपको मसीह को व्यक्तिगत रूप से **जानना** चाहिए। यदि आप उससे पहले कभी नहीं मिले हैं तो आप उससे अभी मिल सकते हैं।''

आप में कुछ लोगों ने कुछ मिनट पहले यह दिखलाया कि आपने यह कर लिया है। पर शायद आप मे कुछ ने अभी तक पश्चाताप न किया हो, विश्वास न किया हो, और अपने जीवन को यीशु को समर्पित न किया हो। परन्तु अब आप समझते हैं कि यीशु ने आपको बचाने के लिए क्या किया है, शायद अब आप पश्चाताप करना चाहेंगे।

आईये प्रार्थना करें ।

(ग). एक उद्धारकर्ता के रूप में हम उस पर किस प्रकार भरोसा कर सकते हैं?

1. हमें .....**पश्चाताप करना**.....चाहिए मरकुस 1:15

2. हमें .....**विश्वास करना**.....चाहिए प्रेरित 16:31; 1 कुरिन्थियों 15:1–6

3. हमें .....**समर्पण करना**.....चाहिए

''पर जितनों ने उसे ग्रहण किया उसने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया अर्थात उन्हे जो उसके नाम पर विश्वास करते हैं''।
– यहून्ना 1:12 (प्रकाशित वाक्य 3:20; गलातियों 2:20)

यह हमारे सम्पूर्ण व्यक्तित्व के समपर्ण को शामिल करता है :

– हमारी बुद्धि

– हमारी भावनाऐ

– हमारी इच्छाएं

समापन :

जो कुछ भी आपने मसीह के बारे में सीखा है ये थोड़ी ही मदद करेगा जब तक कि आप मसीह से भेंट न कर लें। ये काफी नहीं कि कोई मसीह के बारे में जान लें, यीशु ने कहा, ''हरेक नहीं जो मुझे हे प्रभु, हे प्रभु कह कर पुकारता है स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करेगा... उस दिन बहुत से मुझसे कहेंगे, ''प्रभु, प्रभु क्या... बहुत से सामर्थ के काम तेरे नाम से नहीं किए? परन्तु मैं उतर दूंगा, ''तुम मेरे कभी नहीं रहे, मैंने तुम्हें कभी नहीं जाना, यहां से चले जाओ ...।''

ये सम्भव है कि मसीह से आपकी भेंट हो जाए। उसे आपके अन्दर आकर रहना है इसलिए कि आप विश्वासी हो जाएं। मसीही जीवन मसीह की तरह होना या नकल करना नहीं है, पर यहां मसीह अपना जीवन एक विश्वासी में लगाता और उसके जीवन द्वारा अपना जीवन जीता है आपको मसीह को व्यक्तिगत रूप से जानना चाहिए। यदि आप उससे पहले कभी नहीं मिले हैं तो आप उससे अभी मिल सकते हैं।

1. आपके विचार में क्यों पहला अधिवेश्न ''यीशु सामने और मध्य'' कहा गया है?

2. एक विश्वासी यीशु मसीह को क्यों प्रेम करता है? (देखिए 1यहून्ना 4:16)

3. पाप क्या है? (देखिए याकूब 2:10 और 4:17) अनन्त पाप क्या है (यहून्ना 3:18)

4. किसने पाप किया है? (देखिए रोमियों 3:23)

5. पाप क्या करता है (देखिए यशायाह 56:2)

6. किस प्रकार केन मानव जाति के लिए उदाहरण है कि प्रत्युतर में उसने कैसी भेट परमेश्वर को चढ़ाई जो परमेश्वर उससे चाहता था? (देखिए उत्पति 4:1–8; इब्रानियों 11:4; 1पतरस 2:24)

7. क्यों परमेश्वर को मानव बनने की प्रक्रिया से होकर गुजरना पड़ा और क्रुस पर मरना पड़ा? (देखिए रोमियों 5:6–8; इब्रानियों 9:24–28; और 1पतरस 2:24)

8. हम मसीह पर उद्धारकर्ता के रूप में कैसे भरोसा करते हैं?(देखिए मरकुस 1:14,15; प्रकाशितवाक्य 3:20)

9. कौन सी चीजें हैं जो ''वास्तविक'' पश्चाताप से और परिणाम स्वरूप यीशु मसीह की ओर जीवनों को मुड़ने से रोकती हैं?

परिचित हो जाओ

इस अधिवेशन में ये बहुत ही महत्वपूर्ण है कि आप परिचित हो जांए। आपने समूह के सदस्यों से निम्न प्रश्नों के उतर देने के लिए घेरे में बैठते हुए, एक के बाद दूसरे प्रशन का उतर देने के लिए कहें, (प्रश्न न.1, तब प्रश्न न. 2 और फिर प्रश्न न. 3)। आप अपने स्वंय से प्रारम्भ करना चाहेगे।

1. अपने परिवार के सबसे दिलचस्प व्यक्ति के बारे में कुछ बतांए और क्यों।

2. आप अपने प्रतिदिन की दिनचर्या में सबसे अच्छा क्या करना चाहते हैं?

3. आपके सम्बन्धों में कोई ऐसा व्यक्ति है जो यीशु को बहुत प्रेम करता हो उसके बारे में बताएं आप कैसे बता सकते हैं ? उस व्यक्ति का वर्णन करें।

तब, यदि आपके पास समय हो तो

समूह के सदस्यों को पास बुलाइये कि इस पहली शिक्षा के बारे में उनकी क्या भावनांए हैं। सुझाव वाले प्रश्न नीचे दिए गए हैं। इसके बदले आप अपने भी प्रश्नों का प्रयोग कर सकत हो। और समूह के सदस्यों को प्रश्न पूछ सकते हो।

1. क्यों कुछ लोगों को यीशु मसीह पर विश्वास करना कठिन है? बहुधा क्या चीज रास्ते मे आती है।

2. क्या आप कुछ और रास्ता सोच सकते हैं कि हमारे पापों के लिए मसीह का क्रुस पर मरने के इलावा परमेश्वर हमारे पापों के लिए क्या कर सकता था?

3. कौन सी चीजें हैं जो ''वास्तविक'' पश्चाताप से रोकती हैं?

अगले सप्ताह के लिए :

उनका ध्यान पहले प्रश्न पर खींचे, उन्हें अगले अधिवेश्न के पहले इसे पूरा करने के लिए उत्साहित करें।